विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय
रूपम कुमारी ,वर्ग -दशम्, विषय -हिंदी
दिनांक-8अगस्त 2020

NCERT pattern

|| अध्ययन-सामग्री ||

सुप्रभात बच्चो,

<u>पिछले कई कक्षा से लगातार आप 'जॉर्ज पंचम की नाक' को पढ़ते आ रहे हैं....</u>

कल की कक्षा में आपने पढ़ा कि , तय हुआ कि महापुरुषों की नाक काट कर जॉर्ज पंचम की मूर्ति पर लगा दी जाए ।काफी खोजबीन की गई , लेकिन पंचम की नाक पर फिट बैठने वाले कोई नाक नहीं मिली ,तब तय हुआ कि बिहार के सेक्रेटरिएट के सामने छात्र शहीदों का स्मारक बना हुआ है उनमें से किसी शहीद की नाक को फिट कर दिया जाए । दुर्भाग्यवश , उनकी नाक भी फिट नहीं हुई । पूरे महकमे में खलबली मच गई ।अंत में गुप्त बैठक की गई और सारे अधिकारियों ने चुपचाप एक मंत्रणा की कि जिंदा व्यक्ति की नाक को काटकर लगा दिया जाए ।

अब आगे.....

अखबारों में सिर्फ़ इतना छपा कि नाक का मसला हल हो गया है और राजपथ पर इंडिया गेट के पास वाली जॉर्ज पंचम की लाट के नाक लग रही है।

नाक लगने से पहले फिर हथियारबंद पहरेदारों की तैनाती हुई। मूर्ति के आस-पास का तालाब सुखाकर साफ़ किया गया। उसकी रवाब निकाली गई और ताज़ा पानी डाला गया ताकि जो ज़िंदा नाक लगाई जाने वाली थी, वह सूखने न पाए। इस बात की खबर जनता को नहीं थी। यह सब तैयारियाँ भीतर-भीतर चल रही थीं। रानी के आने का दिन नज़दीक आता जा रहा था मूर्तिकार खुद अपने बताए हल से परेशान था। ज़िंदा नाक लाने के लिए उसने कमेटी वालों से कुछ और मदद माँगी। वह उसे दी गई। लेकिन इस हिदायत के साथ कि एक खास दिन हर हालत में नाक लग जानी चाहिए।

और वह दिन आया।

जॉर्ज पंचम के नाक लग गई।

सब अखबारों ने खबरें छापीं कि जॉर्ज पंचम के ज़िंदा नाक लगाई गई है...यानी ऐसी नाक जो कतई पत्थर की नहीं लगती।

लेकिन उस दिन के अखबारों में एक बात गौर करने की थी। उस दिन देश में कहीं भी किसी उद्घाटन की खबर नहीं थी। किसी ने कोई फीता नहीं काटा था। कोई सार्वजनिक सभा नहीं हुई थी। कहीं भी किसी का अभिनंदन नहीं हुआ था, कोई मानपत्र भेंट करने की नौबत नहीं आई थी। किसी हवाई अड्डे या स्टेशन पर स्वागत-समारोह नहीं हुआ था। किसी का ताज़ा चित्र नहीं छपा था।

सब अखबार खाली थे।

पता नहीं ऐसा क्यों हुआ था?

नाक तो सिर्फ़ एक चाहिए थी और वह भी बुत के लिए।

प्रश्न-अभ्यास

1. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है।
2. रानी एलिजाबेथ के दरज़ी की परेशानी का क्या कारण था? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएँगे?
3. 'और देखते ही देखते नयी दिल्ली का काया पलट होने लगा'–नयी दिल्ली के काया पलट के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए गए होंगे?
4. आज की पत्रकारिता में चर्चित हस्तियों के पहनावे और खान-पान संबंधी आदतों आदि के वर्णन का दौर चल पड़ा है–

   (क) इस प्रकार की पत्रकारिता के बारे में आपके क्या विचार हैं?

   (ख) इस तरह की पत्रकारिता आम जनता विशेषकर युवा पीढ़ी पर क्या प्रभाव डालती है?

इस पृष्ठ को ध्यानपूर्वक पढ़िए तो आपको पता

चलेगा कि अंतिम बैठक में सारे अधिकारी हमें गुप्त मंत्रणा हुई और एकाएक बाहर आकर अधिकारियों ने सूचना दी कि नाक का इंतजाम हो गया । कल के अखबार में यह समाचार छपा के नाक का इंतजाम कर दिया गया है ।लेकिन, कैसे ? यह बात किसी को कानों -कान खबर नहीं और एक महत्वपूर्ण बात थी कि जहां मूर्ति लगी थी वहां के तालाब को साफ कर उसका रवाब यानी गंदगी को निकाल दिया गया और उसमें पानी डाल दिया गया ।

इन सारी चीजों का अगर अर्थ समझा जाए, तो यह स्पष्ट होगा कि किसी जिंदा लाश को काटकर जॉर्ज पंचम की नाक पर लगाया जाना तय हुआ था ।उसको दो से 3 दिन तक जीवित रखने के लिए मूर्ति के आसपास की मिट्टी

और वातावरण को गीला करने के लिए तालाब में पानी भरा गया ।जिस दिन नाक लगी इंडिया गेट पर पुलिस मुस्तैद रही ।सारी चौकसी बरती गई किसी का आना जाना वर्जित था और सबसे हैरान कर देने वाली बात थी । । देश के किसी भी कोने में किसी भी प्रकार का समारोह किसी भी प्रकार का जलसा किसी भी प्रकार की बैठक या मंदिर में आवाजाही पर रोक लगा दी गई बच्चों यह बहुत ही गंभीर बात है किसी देश की सारी गतिविधियां इसलिए रोक दी गईकि जिंदा नाक लगने की चर्चा आम जनता में ना हो ।आम जनता को इस बात की भनक ना लगे अगर लोग आपस में मिलेंगे तो सारी बातें निकल कर सामने आ जाए इस वजह से जनता को ही प्रतिबंधित कर

दिया गया । हमारी मीडिया जो कहने को स्वतंत्र कार्य कर सकता है । लेकिन, उनकी करतूत देखिए ,उस दिन सारी अखबार की अखबार में किसी प्रकार का कोई लेख ,कोई सूचना नहीं छपी । तो क्या इस जनसंचार माध्यम मीडिया को हम स्वतंत्र कहेंगे ? क्या जनहित में कार्य करने वाली संस्था कह सकते हैं ? आप खुद समझदार हैं सोचिए समझिए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

अखबारों में सिर्फ़ इतना छपा कि नाक का मसला हल हो गया है और राजपथ पर इंडिया गेट के पास वाली जॉर्ज पंचम की लाट के नाक लग रही है।

नाक लगने से पहले फिर हथियारबंद पहरेदारों की तैनाती हुई। मूर्ति के आस-पास का तालाब सुखाकर साफ़ किया गया। उसकी रवाब निकाली गई और ताज़ा पानी डाला गया ताकि जो ज़िंदा नाक लगाई जाने वाली थी, वह सूखने न पाए। इस बात की खबर जनता को नहीं थी। यह सब तैयारियाँ भीतर-भीतर चल रही थीं। रानी के आने का दिन नज़दीक आता जा रहा था मूर्तिकार खुद अपने बताए हल से परेशान था। ज़िंदा नाक लाने के लिए उसने कमेटी वालों से कुछ और मदद माँगी। वह उसे दी गई। लेकिन इस हिदायत के साथ कि एक खास दिन हर हालत में नाक लग जानी चाहिए।

और वह दिन आया।

जॉर्ज पंचम के नाक लग गई।

सब अखबारों ने खबरें छापीं कि जॉर्ज पंचम के ज़िंदा नाक लगाई गई है...यानी ऐसी नाक जो कतई पत्थर की नहीं लगती।

लेकिन उस दिन के अखबारों में एक बात गौर करने की थी। उस दिन देश में कहीं भी किसी उद्घाटन की खबर नहीं थी। किसी ने कोई फीता नहीं काटा था। कोई सार्वजनिक सभा नहीं हुई थी। कहीं भी किसी का अभिनंदन नहीं हुआ था, कोई मानपत्र भेंट करने की नौबत नहीं आई थी। किसी हवाई अड्डे या स्टेशन पर स्वागत-समारोह नहीं हुआ था। किसी का ताज़ा चित्र नहीं छपा था।

सब अखबार खाली थे।

पता नहीं ऐसा क्यों हुआ था?

नाक तो सिर्फ़ एक चाहिए थी और वह भी बुत के लिए।

प्रश्न-अभ्यास

1. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है।
2. रानी एलिजाबेथ के दरज़ी की परेशानी का क्या कारण था? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएँगे?
3. 'और देखते ही देखते नयी दिल्ली का काया पलट होने लगा'–नयी दिल्ली के काया पलट के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए गए होंगे?
4. आज की पत्रकारिता में चर्चित हस्तियों के पहनावे और खान-पान संबंधी आदतों आदि के वर्णन का दौर चल पड़ा है–

   (क) इस प्रकार की पत्रकारिता के बारे में आपके क्या विचार हैं?

   (ख) इस तरह की पत्रकारिता आम जनता विशेषकर युवा पीढ़ी पर क्या प्रभाव डालती है?